सहजयोग आज का महायोग

अपूर्णता के भाव की समाप्ति ही ईश्वर का सामीप्य है



ईश्वर प्रदत्त इस प्रकृति व मानव मात्र के जीवन को सुंदर बनाना ईश्वर का ही कार्य है, क्योंकि जिस चीज को ईश्वर ने ही निर्मित किया है उसमें बदलाव लाना हमारे हाथ में नहीं। फिर यह कैसे और क्यों कहा जाता है कि जीवन को सुंदर बनाना हमारे हाथ में है। यह तो पहले से ही सुंदर है क्योंकि ईश्वर अपनी हर रचना को जैसी जरुरत है वैसी ही सुंदरता से निर्मित करता है। बस हम मानव की दृष्टि उस सुंदरता को देख नहीं पा रही है क्योंकि हम ऊपरी सुंदरता देखते हैं आंखों से। आंतरिक सौंदर्य जो आत्मिक सौंदर्य है उसे देखने के लिए गहन ध्यान से आत्मा को जागृत करना होगा, तभी हम सृष्टि की कृतियों का आनंद ले सकते हैं।

हम सृष्टि के निर्माता को जिस भी नाम से पुकारें, भगवान कहें, अल्लाह कहें, गॉड कहें, प्रकृति कहें या अन्य किसी नाम से जाने, उसने सृष्टि को इसी तरह से बनाया है कि उसमें कोई भी कमी है ही नहीं। वह अपने आप में परिपूर्ण है। अपने आप में सुंदर है।

21 दिसम्बर 1986 के एक प्रवचन में श्री माताजी कहती हैं, 'परमात्मा ने इतनी सुन्दर सृष्टि की रचना किसलिए की है?, यह एक प्रश्न हजारों वर्षों से पूछा गया है। इसका कारण समझना अत्यंत सरल है। जिस सुन्दरता की रचना की जाती है, वह सुन्दरता स्वयं अपने आप को नहीं देख सकती। ठीक इसी तरह, परमात्मा, जो कि स्वयं सुंदरता का स्रोत हैं, वह परमात्मा अपनी स्वयं की सुंदरता को नहीं देख सकते, जैसे एक मोती अपनी सुंदरता देखने के लिए अपने अंदर प्रवेश नहीं कर सकता, जैसे आकाश अपनी स्वयं की सुंदरता को नहीं समझ सकता। सितारे अपनी सुंदरता को नहीं देख सकते। सूर्य अपनी चमक को नहीं निहार सकता। इसी तरह से, सर्वशक्तिमान परमात्मा भी अपने स्वयं के अस्तित्व को नहीं देख सकते। उस परमात्मा को एक दर्पण की जरूरत होती है। और यही कारण है कि उस परमात्मा ने इस सुन्दर सृजन की रचना अपने लिए एक दर्पण के रूप में की है।'' यानि जैसे हम स्वयं में सौंदर्य तलाशते हैं वैसे ही ईश्वर भी हममें स्वयं के सौंदर्य को तलाशते हैं।

इसीलिए हमारी सभी आवश्यकताओं को प्रकृति पूरा करती है। जितनी भी असंगति या बुराई हम देखते हैं या उत्पन्न होती रहती हैं, वे सभी हमारे ही द्वारा बनाई गई हैं। साथ ही, हमारा मस्तिष्क इस रूप में विकसित हो जाता है कि वह हमेशा भविष्य को देखता है। हमारे मस्तिष्क के हमेशा ही भविष्य में ही दौड़ते रहने के कारण हमारे अंतर को हमेशा एक अपूर्णता की भावना घेरे रहती है।

आधुनिक जीवन के तरीकों ने, भौतिकवादिता ने मनुष्यता पर बहुत नकारात्मक प्रभाव डाले हैं, अपूर्णता के एहसास ने इस भावना को और गहरा कर दिया है। साथ ही, यह गलत विश्वास भी दिलाया है कि इस अपूर्णता को पूर्ण करने के लिए आपको अधिक धन कमाना होगा, अधिक भौतिक वस्तुओं का अर्जन करना होगा।

यदि आप जीवन की सुंदरता को देखना चाहते हैं तो, थोड़े दिनों के लिए, केवल कुछ सप्ताह के लिए एक प्रयोग करके देख सकते हैं। अपने मन पर, अपने विचारों पर नजर रखने की कला, और जब भी मन भविष्य की ओर भागे तो उसे रोकने की कला सीखते हैं। एक ऐसी विधि जब हम स्वयं से कहने लगेंगे कि मैं पूर्ण हूं, मेरे जीवन में कोई भी कमी नहीं है, मैं खुश हूं, मुझे और किसी भी भौतिक वस्तु की तलाश नहीं है।

शुभ दीपावली महालक्ष्मी महापूजा मुर्हुत



भारतीय ज्योतिष परिषद के जिला अध्यक्ष तथा ज्योतिष शोध संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष पं. शिव प्रकाश जोशी द्वारा बताया गया कि सर्व प्रथम दिनांक 06/11/2026 को महापूजा धन के देवता श्री कुबेर जी महाराज एवं आयुर्वेद के जनक श्री धनवन्तरी महाराज की महापूजा शुक्रवार तेरस प्रदोष में प्रातःकाल 6 बजे से प्रातः 10:30 बजे तक सभी संस्थान, मकान दुकान, फेक्ट्रीयों में गंगाजल गौमूत्र से शुद्धीकरण तथा विशेष साज सज्जा तथा कुबेर भगवान की प्रतिमा मुर्ति पूजा तथा री धनवंतरी जी महाराज की प्रतिमा या चित्र तस्वीरों की स्थापना दिप प्रज्वलन, हार फुल, प्रसाद, का नैवेद्य लगाया तथा दोपहर में 12:00 बजे से 01:30 बजे तक शुभ वेला में चांदी सोना समस्त धातु मशिनरी, धान, वस्त्र आदि का क्रय विक्रय करना शुभ माना गया। सायंकाल गोधूलि वेला में सभी स्थानों पर दीप प्रज्वलित करना पूजा अर्चना आदि का विशेष महत्व है।

द्वितीय दिवस 07/11/2026 को रूप चतुर्दशी को रूप चौदस भी कहा जाता है। प्रातः सूर्योदय से पहले स्नान करना चाहिए। सूर्य अर्घ्य देना चाहिये क्योंकि यह दिन सूर्य के पुत्र यमराज का दिन भी माना गया है अतः माता बहनो को सरोवर तालाब नदी आदि स्थान पर सायंकाल 6:30 से 7:30 बजे यमराज के नाम दीपदान तथा टाटीयो पर दीपक जलाकर विसर्जन करने का विशेष महत्व हैं इसे दिन माता बहनों और भाइयों को व्रत भी रखना चाहिए। दिप दान करने से यमराज की यातनाओं से मुक्ति मिलती है तथा नरक का वास नहीं होता है स्वर्ग की प्राप्ति होती है। धुप दिप नैवेद्य हार फुल प्रसाद अर्पण करना चाहीए।

तृतीय दिवस दिनांक 08/11/2026 महालक्ष्मी महापूजा का यह दिन विशेष पूजा विधान का दिन है। प्रातः काल सूर्योदय से पुर्व सभी मकान संस्थान, दुकान, पर गोमूत्र गंगाजल से स्थान पवित्र करे। प्रातः काल 7:30 से 12:40 तक पूजन विधान भी करना श्रेष्ठ माना गया है इसमें चल लाभ अमृत तीनो चोघडिया साथ है। तथा अभिजीत नक्षत्र भी रहेगा। इसके पश्चात दुकान संस्थान मिल फैक्ट्री तथा निवास स्थान पर दोप. 01:30 से 03:00 बजे तक शुभ का चौघड़िया पूजन करने के लिये विशेष शुभ माना गया है। उसके पश्चात वृषभ लग्न सायंकाल 06:40 से 08:15 तक विशेष शुभ माना गया इसमें महालक्ष्मी की महापूजा करना विशेष शुभ माना गया तथा चौघड़िया के मान से भी सायंकाल 06:00 से 10:30 का समय अतिउत्तम रहेगा। इसके पश्चात सिंह लग्न की महापूजा का समय रात्रि 12:46 से रात्रि 02:40 तक रहेगा। इसमें कनक धारा स्त्रोत महालक्ष्मी स्त्रोत विष्णु सहस्त्र नाम तथा कुबैर पूजा का विशेष महत्व माना गया है। इससे धन लक्ष्मी वैभव व्यापार व्यवसाय श्रेष्ठ तथा घर में सुख शांति व आनंद की प्राप्ति होती है। 146 वर्षे पश्चात ईशा महायोग दिनांक 08/11/2026 को आया है। जो सम्पूर्ण समाज तथा सम्पूर्ण भारत एवं विश्व कल्याण शांति के लिये श्रेष्ठ माना गया है। रबी की फसल श्रेष्ठ होगी। दिसंबर जनवरी और फरवरी में मावठे होंगे जिससे फसल अच्छी श्रेष्ठ होगी। सभी फसलों के भाव ऊंचे रहेंगें। सभी प्रकार की धातुएं चांदी, ताबा, पितल तेजी के बाद विशेष गिरावट आयेगी। विश्व शांति एवं सद्भावना का त्यौहार है। शुभकामनाओं सहित मंगलकारी हो ... इति शुभम

ज्योतिषाचार्य/भागवताचार्य पं. शिव प्रकाश जोशी मो. 9406602214

पुरानी फिल्मों का लौटता क्रेज



महज 115 वर्षों में भारतीय फिल्मों ने कई दौर देखे। टॉकीजों में हाउस फुल से लेकर ब्लैक में टिकट का भी मजेदार जमाना था। धीरे-धीरे तकनीक ने इस इण्डस्ट्री को नया ठौर दिया। एक समय थ्री डी फिल्मों का भी जबरदस्त क्रेज रहा। लेकिन लोगों, खासकर भारत की बात करें तो पुरानी फिल्में और पुराने गीत ही लोगों की जुबान पर हमेशा छाए रहे।

चाहे सफर में लक्जरी कार में हों या ट्रेन में मोबाइल पर बज रहे गीत ज्यादातर पुराने और 60 से 90 दशक के बीच के ही बजते सुनाई देते हैं। तमाम बदलाव व चुनौतियों के बाद धमाकेदार शुरुआत के बावजूद नए दौर के गानों ने वो मुकाम कभी हासिल ही नहीं किया जो कि पुराने गानों का अब तक बना हुआ है। कमोवेश अब ऐसा ही ट्रेन्ड पुरानी फिल्मों को लेकर लौट रहा है। भले ही तकनीक ने बहुत बड़ा बदलाव किया और फिल्मों को एक से एक आडिया दिए लेकिन बावजूद तमाम फैन्टासी, थ्रिल, मिक्सिंग, वीडियो एडिटिंग, एनीमेशन के पुरानी और सीधी सपाट शूटिंग से बनी फिल्मों का आकर्षण कमा जरूर लेकिन घटा नहीं।इस बीच कम से चार-पांच पीढ़ियों का अंतर भी आया। 3 घंटे की जगह 2 घंटे की फिल्में बनने लगीं, ब्लैक एंड व्हाइट से कलर फिल्में बनीं और सिनेमाघरों के साथ-साथ मल्टीप्लेक्स, ओटीटी तथा होम थियेटर का भी चलन शुरू हो गया। नई पीढ़ी का फिल्मों उसमें विशेषकर गीत-संगीत के प्रति बदलता नजरिया और जायका भी दिखा।पश्चिमीकरण के प्रभावों में आकरन केवल भारत बल्कि दुनिया भर में तमाम संगीत, संस्कृतियां इससे प्रभावित हुईं और मूल स्वरूप तक को खो दिया। जैज, रॉक एंड रोल, और कंट्री-वेस्टर्न ने धमाल मचाना शुरू किया। सुमधुर भारतीय संगीत परंपरा ने वो दौर भी देखा जब तेज और विदेशी वाद्य यंत्रों के साथ मिक्स संगीत कल्चर ने खूब हल्ला मचाया।बीच-बीच में पॉप्युलर्ड्सन का भी एक दौर भी चला। तब भी पुराने गानों की लोकप्रियता में कमी नहीं आई।

रेडियो सीलोन जो बाद में श्री ब्रॉडकास्टिंग कार्पोरेशन के नाम से प्रसारण करने लगा से प्रसारित बिनाका गीत माला ने तो धूम ही मचा दी।यह शो 1952 से 1988 तक रेडियो सीलोन पर हर बुधवार को प्रसारित हुआ।

इसने भी भारतीय गीतों को बड़ी उंचाई दी। लोग इतने दीवाने थे कि सारा काम निपटा कागज, पेन ले गीतों की ग्रेडिंग के लिए बैठ जाते। हालांकि बाद में 1989 से 1994 तक इसे विविध भारती से प्रसारित किया लेकिन तब तक टेलीविजन का युग भारत में आ चुका था और इस कार्यक्रम की लोकप्रियता घटती गई। बावजूद इसके सरकारी नियंत्रण के शुरुआती चैनल दूरदर्शन पर भी भारतीय फिल्मों के गीतों के कई कार्यक्रम चित्रहार और अलग-अलग नामों से आए और खासे लोकप्रिय हुए। इनमें भी पुराने गीतों का जलवा रहा। लेकिन 1970 के दौर से ही पश्चिमी संगीत का प्रभाव दिखने लगा। नई पीढ़ी धीरे-धीरे इसकी गिरफ्त में आने लगी। टेप रिकॉर्डर के आते ही फिर नए-पुराने गीतों की अघोषित प्रतिस्पर्धा भी काफी दिखी।

शादी-विवाह में भी यह सब दिखा। लेकिन पिछले एक-डेढ़ दशक से एक बार फिर न केवल पुराने गीत-संगीत वापस सुनाई देने लगे हैं बल्कि रिमिक्स के नाम पर उसका सम्मिश्रण अलग ही तरह की अनुभूति देने लगा।3 मई 1913 को भारतीय सिनेमा की पहली फीचर फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' प्रदर्शित हुई जो गूंगी थी यानी बिना आवाज की फिल्म। इसका निर्माण भारतीय सिनेमा के पितामह दादा साहेब फाल्के ने किया था। तब से लेकर अब तक बॉलीवुड का सफर हमेशा ऊंचाइयों को ही छूता रहा। इस बीच दक्षिण, पंजाब, भोजपुरी सहित तमाम क्षेत्रीय भाषाओं में भी फिल्मों का भी जबरदस्त दौर आया जो अब भी जारी है।

लेकिन पूरे भारत की बात करें तो फिल्म और संगीत में अब भी पुराने गीत-संगीत का धमक और जादू जस का तस है। लेकिन लोगों का पुरानी फिल्मों के प्रति बदलता नजरिया और आकर्षण भले ही नई तकनीक ओटीटी और इण्टरनेट के जरिए होम थियेटर के प्रभाव बढ़ा लेकिन यह सच है कि परन्तु पुरानी फिल्मों का क्रेज धीरे-धीरे अपनी रफ्तार पकड़ रहा है। मदर इण्डिया, उपकार, पूरब-पश्चिम, गुड्डी, हाथी मेरे साथी, आनन्द, गाइड, दीवार, कटी पतंग, हरे रामा हरे कृष्णा, लैला-मजनू, मुगल-ए-आजम, शोले, बॉबी जैसी ढ़ेरों फिल्मों ने तबकी युवा और अबकी बूढ़ी हो चुकी पीढ़ी पर अमिट छाप छोड़ी। हां, नई तकनीक उसमें भी खासकर इण्टरनेट के प्रभाव से कुछ वर्षों तक ये फिर से बॉक्स में बंद जैसी स्थिति में जरूर थीं। लेकिन सुकून की बात है कि एक बार फिर पुरानी और संदेश देती लोकप्रिय फिल्मों का दौर लौट रहा है।

इसके पीछे लोगों का भावनात्मक जुड़ाव और दमदार स्क्रिप्ट है। कहानियां सच के धरातल पर दिखती हैं। शायद यही वजह है कि पुरानी फिल्में थियेटर से लेकर मल्टीफ्लेक्स पर फिर अपना जलवा बिखेरने को तैयार हैं।

निश्चित रूप से भारतीय परिवेश, संस्कार, रीति-रिवाज वो चाहे देश के पूरब से पश्चिम हो या उत्तर से दक्षिण लोग वापस जुड़ रहे हैं और जानना-समझना चाहते हैं जो बेहद सुकून की बात है। नई पीढ़ी का पुरानी भारतीय फिल्मों के प्रति लगाव-झुकाव बेहद सुखद संदेश है।

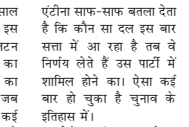
आयुषी दवे (लेखिका इलेक्ट्रॉनिक्स एवं कम्युनिकेशन में इंजीनियर हैं)

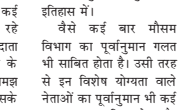
मैं कभी हार नहीं मानती हूँ

जी हाँ ! मैं कभी हार नहीं मानूँगी, चाहे इस जमाने में मुझे कितनी ही हार का सामना ही क्यों न करना पड़े, क्योंकि हमारे ईश्वर ने हमें इसके लिये नहीं बनाया है, कि हम समुद्र में लहरों और हवाओं के झोंकों को देखकर तैरती नाव में ही डर के मारे डूब जाएँ। हमें तो अपने समुद्र रूपी जीवन में लहरों के रूप में दुःख और हवा के रूप में हमारी हार के कारणों को खोजकर उनका समाधान शांतिपूर्वक करना चाहिए। मेरे अभी तक के जीवन में मेरी नाव कई बार हिचकोले खा चुकी है, और एक हार से पार पाने के बाद दूसरी हार तैयार रहती है। मैं इस जीवन रूपी समुद्र में एक जंगल के समान अपने लक्ष्य पाने का रास्ता भी भूल जाती हूँ, पर मैं अपने इष्ट देवता का स्मरण कर शांति से अपनी मंजिल को खोजता रहता हूँ। यह कोई मन गढ़ंत कहानी नहीं, बल्कि मेरे और आप सबके जीवन में ऐसा घटता है, और मैं और आप सब इससे वाकिफ हैं। आपको सिकन्दर की कहानी तो याद होगी, वो कैसे वीर योद्धा बनकर रण में उतरे होंगे कि उन्हें कोई राजा-महाराजा परास्त नहीं कर पाया और वे विश्व विजेता बन गये थे। सिकन्दर भी तो आप और मुझसा ईंसान था, यदि हम भी अपने मन पर काबू रखकर उसे उचित कार्यों में लगायेंगे तो हमारी यह मन की जीत भी सिकन्दर से महान सिकंदर बना देगी। अपने मन को वश में कर उसे अपने लक्ष्य पर एकाग्रचित करने की हमें कोशिश करना चाहिए, अगर हमारा मन इधर-उधर भटकेगा तो हम कहीं के भी नहीं रहेंगे और हमारे दस कार्यों में से एक भी ठीक ढंग से पूरा नहीं हो पायेगा और हम निराश होने लगेंगे और यही नराशा भविष्य में हमारी हार का कारण बनेगी, तब हम अपनी किस्मत को दोष देने लगेंगे। हमें चाहिए हम अपनी किस्मत को दोष न देकर अपनी हार के कारण को खोजें और उसे दूर करें। वास्तव में तो हमें वक्त बनाने वाली घड़ी के कांटों की तरह लगातार अपने लक्ष्य की ओर सतत् बढ़ते रहना चाहिए चाहे हमारी राह के बीच में पहाड़ आये या दीवार, उसे तोड़कर अपना रास्ता बनाते रहना चाहिए, क्योंकि जब एक नन्ही चीटी दीवार पर चढ़ती है, तो वह कई बार उस पर से कई बार गिरती और फिसलती है, पर वह आखिर तक हार नहीं मानती है, दीवार, पहाड़ पार कर वह अपने घर तक पहुँच ही जाती है। जब गोताखोर नदियों में मेहनत के साथ मन में लगन, आशा और विश्वास लेकर गोता लगाता है, उसकी मेहनत हर बार बेकार नहीं जाती, एक बार तो वह अपनी कई दिनों की मेहनत का फल लेकर लौटता है। असफलता हमारी दुश्मन है और हमें उससे लोहा लेना चाहिए, क्योंकि असफलता बतलाती है कि हमारे किये गए कार्यों में कोई कमी, भूल या गलती अवश्य है। जो व्यक्ति अपना कार्य सही ढंग से सही समय में करते हैं, वे निश्चित ही सफलता प्राप्त करते हैं। हमें केवल परिश्रम पूर्वक आगे बढ़ने और विकास की मंजिल पाने की सोचना चाहिए और उस दिशा में शांतिपूर्वक, सही तरीके से कार्य करना चाहिये और हार नहीं मानना चाहिये क्योंकि मैं भी हार नहीं मानती हूँ।

डॉ. पूर्णिमा जोशी 'पूनम सरल' अवकाशप्राप्त सहायक प्राध्यापिका, इलवा कॉलेज, इन्दौर मो.नं. 9425064012

आया मौसम पलटने का





तिरछी नज़र

आनंद बक्शी जी ने फरमाया है: पतझड़, सावन, बसंत, बाहर, एक बरस में मौसम चार। और पांचवें मौसम प्यार का भी जिक्र उन्होंने कर दिया है। लिखेरा पंडित छठे मौसम की भी घोषणा कर रहे हैं। यह मौसम है पलटन मौसम। पर ये छठा मौसम हर साल नहीं आता कई बार 5 साल में एक बार आता है

और कई बार तो 2 साल में भी आ सकता है। इस मौसम का नाम है पलटन मौसम यानी पलटने का मौसम। तो यह जो पलटने का मौसम है यह तब आता है जब चुनाव नजदीक होता है। कई ऐसे मौसम विशेषज्ञ नेता रहे हैं हमारे देश में जो मतदाता के मन में चल रहे हवा के झोंके को आसानी से समझ लेते हैं। और फिर उसके अनुसार पलटने की क्रिया करते हैं। एक दिवंगत नेता के बारे में कहा जाता है कि सरकार जिस पार्टी की बनने वाली होती थी, ऐन समय पर वे उस पार्टी में शामिल हो जाते थे। अभी हमारे एक प्रांत में विधानसभा चुनाव आ रहा है और ऐसे में कुछ नेता तो सीधे एक पार्टी से दूसरी पार्टी में गुलाटी मार ले रहे हैं तो कुछ नेता इसी काम को कई भागों में कर रहे हैं। उदाहरण के लिए पहले वे अपनी पार्टी को छोड़ रहे हैं और कुछ दिन तक हवा का रुख देख रहे हैं। जब उनका एंटीना साफ-साफ बतला देता है कि कौन सा दल इस बार सत्ता में आ रहा है तब वे निर्णय लेते हैं उस पार्टी में शामिल होने का। ऐसा कई बार हो चुका है चुनाव के इतिहास में।

वैसे कई बार मौसम विभाग का पूर्वानुमान गलत भी साबित होता है। उसी तरह से इन विशेष योग्यता वाले नेताओं का पूर्वानुमान भी कई बार गलत साबित होता है। कई बार ऐसा होता है कि जिस पार्टी को छोड़कर वे दूसरी पार्टी में इस आशा के साथ जाते हैं कि वे फिर से सत्ता में बने रहेंगे वही पार्टी सत्ता में आ जाती है। अर्थात इनके साथ उलटा हो जाता है। निश्चित रूप से ऐसे में उन्हें दुःख होता होगा। मामला जो भी हो लेकिन इतना तो तय है कि यह भी मौसम की सूची में शामिल हो गया है पलटने का मौसम। अब जरूरत है इसे एक अच्छा सा नाम देने की।

विनय कुमार पाठक, जयपुर

कूड़ेदान में पेंग्विन की घुसपैठ! कचरा हम फैलाएं और मुंह जानवर खोलें!



सुबह की सैर के दौरान पार्क में पानी की बोतल खाली हुई। सोचा, क्यों न एक जिम्मेदार नागरिक की तरह इसे कूड़ेदान में डालकर स्वच्छता अभियान में अपना छोटा-सा योगदान दे दिया जाए। लेकिन कूड़ेदान के पास पहुंचते ही कदम ठिठक गए। सामने एक पेंग्विन मुंह खोले खड़ा था। उसकी मुद्रा कुछ ऐसी थी, मानो सुबह से भूखा हो और मेरी खाली बोतल को ही नाश्ता समझकर बैठा हो!

पहले तो लगा कि ग्लोबल वार्मिंग का असर इतना बढ़ गया है कि दक्षिणी ध्रुव का पेंग्विन इंदौर के पार्क में पहुंच गया। फिर गौर से देखा तो समझ आया कि यह कोई पर्यावरण संकट नहीं, बल्कि नगर सौंदर्यीकरण की नई उपलब्धि है। पेंग्विन के आकार का कूड़ेदान बनाया गया था। बेचारे को बर्फीले प्रदेश से उठाकर कचरा निगलने की ड्यूटी पर लगा दिया गया था। वह भी बिना वेतन, बिना छुट्टी और बिना किसी शिकायत निवारण व्यवस्था के!

जानकारी मिली कि पुराने जमाने के साधारण कूड़ेदान अब आधुनिक पार्कों की सुंदरता के अनुरूप नहीं माने जाते। इसलिए उन्हें जानवरों और रंग-बिरंगी आकृतियों का रूप दिया जा रहा है। अधिकारियों का तर्क है कि इससे पार्क आकर्षक बनते हैं और बच्चे भी कचरा निर्धारित स्थान पर डालने के लिए प्रेरित होते हैं।

वाह! अब स्वच्छता अभियान में भी सौंदर्य प्रतियोगिता शुरू हो गई है। पहले कूड़ेदान का काम कचरा समेटना था, अब उसे सुंदर दिखना भी जरूरी है। लगता है भविष्य में कूड़ेदान की नियुक्ति से पहले उसका फोटोशूट, डिजाइन अप्रूवल और सौंदर्य परीक्षण भी होगा। साधारण लोहे की बाल्टी को शायद पार्क में नौकरी ही नहीं मिलेगी। उसे पहले किसी डिजाइनर से मेकओवर करवाना पड़ेगा!

कहीं पेंग्विन मुंह खोले खड़ा है, कहीं हाथी अपनी सूंड फैलाए है और कहीं रंग-बिरंगे कार्टून कचरा निगलने के लिए तैयार हैं। बच्चों के लिए यह आकर्षण हो सकता है। वे कूड़ेदान को देखकर खुश भी होते हैं। लेकिन सवाल यह है कि हमारी प्राथमिकता क्या है—कूड़ेदान का चेहरा या शहर की सफाई? कहीं ऐसा न हो कि हम कूड़ेदान की तस्वीरें खींचकर सोशल मीडिया पर डालते रहें और उसके आसपास जमा कचरा तस्वीर से बाहर रखने के लिए कैमरे का एंगल बदलते रहें!



कई पार्कों में दृश्य बड़ा मनोरंजक होता है। पेंग्विन का मुंह कचरा निगलने के लिए खुला है, लेकिन उसके आसपास ही कचरे का ढेर लगा है। लगता है नागरिकों ने तय कर लिया है कि कूड़ा डालना तो है, मगर पेंग्विन के मुंह तक पहुंचने की मेहनत कौन करे! कुछ लोग तो ऐसे भी मिल जाएंगे जो कूड़ेदान के ठीक सामने खड़े होकर कचरा उसके बाहर डालेंगे। शायद उन्हें लगता है कि पेंग्विन को भी थोड़ा व्यायाम करना चाहिए और नीचे झुककर अपना भोजन उठाना सीखना चाहिए।

कुछ कूड़ेदान इतने छोटे हैं कि दो-चार बोतलों में ही उनका पेट भर जाता है। ऊपर से सफाई कर्मचारी समय पर खाली न करें तो पेंग्विन का पेट ही नहीं, पूरा पार्क परेशान हो जाता है। ऐसी स्थिति में पेंग्विन के चेहरे पर बनी मुस्कान भी मानो शिकायत करने लगती है—'मुझे कचरा निगलने के लिए बनाया है, कचरे के पहाड़ पर बैठने के लिए नहीं!' अब तो कूड़ेदानों की अलग-अलग श्रेणियां बनाने का विचार भी अच्छा लगने लगा है। पेंग्विन को प्लास्टिक की बोतलें, हाथी को भारी कचरा और बंदर को फलों के छिलके दिए जाएं। शेर को ऐसा कचरा सौंपा जाए जिसे देखकर बाकी कूड़ेदान भी डर जाएं। नगर निगम चाहे तो इनके लिए अलग-अलग पदनाम भी जारी कर सकता है—'स्वच्छता मित्र पेंग्विन', 'कचरा प्रबंधन हाथी' और 'जैविक अपशिष्ट बंदर'!

मजाक अपनी जगह, लेकिन असली समस्या हमारी आदतों में है। गाड़ी में कचरा रखने के लिए एक छोटी थैली रखना हमें भारी लगता है, मगर चलती गाड़ी से खाली पैकेट सड़क पर फेंकना बेहद आसान। चिप्स का पैकेट खाते समय हाथ साफ रहता है, लेकिन उसे सड़क पर फेंकने के बाद हमारी जिम्मेदारी भी जैसे खत्म हो जाती है। सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी फैलाने के बाद हम ही स्वच्छ शहर की रैंकिंग पर गर्व करते हैं। यानी सफाई की जिम्मेदारी सरकार की और गंदगी फैलाने की स्वतंत्रता नागरिकों की!

कभी सोचता हूं कि यदि पेंग्विन बोल पाता तो नगर निगम के अधिकारियों से कुछ सवाल जरूर पूछता—'महोदय, मेरी नियुक्ति कूड़ेदान के पद पर हुई है या पार्क के सजावटी मॉडल के रूप में? मेरी क्षमता से अधिक कचरा आने पर ओवरटाइम मिलेगा या नहीं? मेरी नियमित सफाई की जिम्मेदारी किसकी है? और जो लोग मेरे मुंह के बजाय मेरे पैरों के पास कचरा डालते हैं, उनके लिए कोई चालान व्यवस्था भी है या नहीं?'

वह शायद यह भी पूछता कि जब मुझे कचरा निगलने के लिए नियुक्त किया गया है तो मेरे पेट की क्षमता के अनुसार काम क्यों नहीं दिया गया? आखिर मैं पेंग्विन हूं, कोई असीमित क्षमता वाला कचरा प्रबंधन संयंत्र नहीं!

वास्तव में आकर्षक कूड़ेदान बनाना अच्छी पहल है। इससे बच्चों और नागरिकों में स्वच्छता के प्रति रुचि बढ़ सकती है। लेकिन इसके साथ पर्याप्त क्षमता, नियमित सफाई, गीले और सूखे कचरे का पृथक्करण तथा कचरे का वैज्ञानिक निस्तारण भी जरूरी है। केवल डिजाइन बदलने से स्वच्छता नहीं आती। इसके लिए व्यवस्था के साथ नागरिकों का व्यवहार बदलना भी उतना ही आवश्यक है।

किसी पार्क की सुंदरता केवल रंगीन कूड़ेदानों से नहीं, बल्कि साफ रास्तों, स्वच्छ हरियाली और जिम्मेदार नागरिकों से बनती है। पेंग्विन को पार्क में लाना आसान है, लेकिन नागरिकों की आदतों में स्वच्छता लाना असली चुनौती है।

आखिर कूड़ेदान का चेहरा चाहे पेंग्विन का हो, हाथी का या शेर का, शहर की सफाई का भविष्य उसके मुंह पर नहीं, हमारी आदतों पर निर्भर करता है। वरना एक दिन ऐसा भी आएगा जब कूड़ेदान के बाहर कचरे का ढेर देखकर पेंग्विन खुद अपना मुंह बंद कर लेगा और कहेगा—'भाइयों, अब मुझसे नहीं होगा! कचरा फैलाना आपका शौक है तो समेटना भी आपकी ही जिम्मेदारी है!'

अजय कुमार बियानी अभियंता एवं स्वतंत्र लेखक